लाली मेरे लाल की

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय गोरखपुर शाखा के 75 वर्षीय वरिष्ठ भ्राता, ब्रह्माकुमार अवध बिहारी जी, 20 वर्षों से इस संस्था में अनवरत आध्यात्मिक ज्ञान एवं सहज राजयोग की साधना में लगे हैं तथा स्थानीय मण्डल कारागार में कैदियों के आध्यात्मिक एवं चारित्रिक उत्थान हेतु उत्कृष्ट एवं नि:शुल्क सेवाएँ दे रहे हैं। प्रस्तुत हैं मीडिया के प्रतिनिधि भ्राता रोहित जी से हुई इनकी बातचीत के कुछ अंश – सम्पादक

प्रश्न : इस ज्ञान में आने के पहले आपका जीवन कैसा था?

इस ज्ञान में आने के पहले मेरा जीवन बिलकुल ही विकारी था। काम, कोध जैसे महाशत्रुओं ने मुझे पूर्णतया कैद कर रखा था। बुरे व्यसन भी मेरे जीवन पर हावी थे। मैं उनके चंगुल से चाहकर भी नहीं छूट पाता था क्योंकि कामी एवं व्यसनी लोगों का संग था। म्लेच्छ, राक्षसी भोजन तथा शराब मेरे जीवन का अंग बन गए थे। चाहे सुबह, चाहे शाम, टकराते थे जाम पर जाम।

प्रश्न : यह संस्था तो गोरखपुर में करीब चालीस वर्षों से सेवारत है, आप इतने विलम्ब से क्यों जुड़े?

एक तरफ देहाभिमान तो दूसरी तरफ दर्शन शास्त्र में एम.ए. होने का अभिमान। स्वयं के ही व्यर्थ संकल्प वहाँ जाने में बाधक बन जाते थे। सोचता था, ये ब्रह्माकुमारी लड़कियाँ मुझ दर्शन शास्त्र से एम.ए. जैसे विद्वान को क्या ज्ञान देंगी? इन लड़कियों को अपना गुरु कैसे स्वीकार करूँगा, इनके चरणों पर माथा कैसे टिकाऊँगा, लोग मुझे क्या कहेंगे? इन सफेदपोश लड़कियों के बीच बैठने से तो दृष्टि-वृत्ति एकाग्र होने के बजाय और ही ज्यादा खराब होगी। मन तो और ही चलायमान होगा, लड़कियों के बीच बैठकर कोई भी साधक अपनी साधना में भला सफल कैसे हो सकता है?

प्रश्न : आखिर आपके इस भ्रम को किसने तोड़ा?

इसके पीछे एक रोचक कहानी है। मैं और ब्रह्माकुमार शिवेश्वर भाई रेलवे कालोनी में अगल-बगल रहा करते थे। इनकी युगल ने शरीर छोड़ दिया और यह भाई ब्रह्माकुमारी पाठशाला से जा जुटा और मैं अपनी पत्नी से तंग आकर मधुशाला से जा जुटा। दोनों का गम एक ही तरह का था पर एक गया शिवालय में तो दूसरा गया मदिरालय में। शिवेश्वर भाई के बच्चों को मैं जब देखता तो सोचता, भाई तो ब्रह्माकुमारियों के चंगुल में जा फँसा, अब इन अनाथ बच्चों का क्या होगा? इधर मेरे बच्चों को देख शिवेश्वर भाई का संकल्प चलता, भाई तो अब अपना सारा वेतन शराब में बर्बाद कर रहा है, अब ये बच्चे तो सड़क पर नज़र आयेंगे। एक-दूसरे के बच्चों के प्रति हम दोनों को रहम की भावना थी लेकिन अहम् और वहम के कारण हम दोनों के संकल्प एक-दूसरे से टकराते रहे। ये मुझे शराब के नशे से मुक्त करना चाहते थे और मैं इन्हें ''ड्रींक एण्ड मेरी (पीओ और खुश रहो)'' के सिद्धांत पर मस्त जीवन युक्त करना चाहता था। ये मुझे शिवालय ले जाना चाहते थे और मैं इन्हें मदिरालय में खींचना चाहता था। यह खेल एक लम्बे अर्से तक चलता रहा। अन्त में असत्य पर सत्य की विजय हुई। गम मिटाने के लिये अपने कमरे में मैं जाम लगा रहा था कि अचानक शिवेश्वर भाई ने वहाँ पहुँचते ही सुनाया –

कर गुनाहों से तौबा
रहते वक्त सम्भल जाये,
इस दम का क्या भरोसा
जाने कब निकल जाये।

इसके बाद एक सफेद कागज़ की पुड़िया मेरे टेबल पर रखते हुए बोले, भोजन के बाद इसे खा लीजियेगा। पता नहीं उस टोली (प्रसाद) में जादूगरी का कमाल था या मुझे ज्ञान में ले जाने का शिवेश्वर

को निरोगी और भोगी जीवन को योगी जीवन में बदल दिया। आज भी मैं इनका शुक्रगुजार हूँ।

भाई के अथक प्रयास का फल? सुबह होते ही इनके साथ सेवाकेन्द्र पर पहुँच गया। मेरे गन्दे विचारों के ठीक विपरीत ही वहाँ का वातावरण मिला। वहाँ प्रेम, पवित्रता एवं शान्ति के प्रकम्पन फैले हुए थे। सभी भाई-बहनें फरिश्ता स्वरूप दिख रहे थे तथा उनमें रूहानी आकर्षण था। एक झटके में ऐसा लगा कि देवलोक में इन फरिश्तों के बीच मैं कहाँ से टपक पड़ा। फिर पहला पाठ, ''आप आत्मा हो'' पक्का कराया गया। मैंने यह भी अनुभव किया कि मेरी पढ़ी हुई फिलासफी से यह ''फिलासफी आफ ब्रह्मा'' बिल्कुल ही भिन्न और मेरे लिए नयी थी, जो मेरे मन को भा गयी। ईश्वरीय ज्ञान एवं सहज राजयोग का अभ्यास बहुत ही अच्छा लगा। तबसे मैं प्रतिदिन नियमित रूप से केन्द्र प्रभारी पुष्पा बहन के निर्देशन में राजयोग का अभ्यास करने लगा। इस प्रकार, भ्राता शिवेश्वर जी ने मेरे रोगी मन

प्रश्न : हर साधक की परीक्षा होती है, राजयोग की साधना में आपकी कोई परीक्षा हुई?

पढ़ाई के साथ परीक्षा, जीवन के साथ जंग और सागर के साथ लहर सदा ही जुड़ी हुई है। कुदरत के इस नियम को हम बदल नहीं सकते। लेकिन परीक्षा, परिस्थिति और लहर को सही रीति से पार किया जा सकता है। इसके लिये आध्यात्मिक ज्ञान एवं सहजयोग का प्रयोग चाहिये। आध्यात्मिक ज्ञान को समझ लेने के बाद अपने स्वरूप में ढाल लेना एक बहुत बड़ी साधना है। यह मार्ग, सभी मार्गों से कठिन होता है। कभी शरीर की नाजुक स्थिति, तो कभी पारिवारिक परिस्थिति, कभी वियोग तो कभी कर्मों का भोग, कभी व्यापार में घाटा तो कभी माया का चाँटा, यही परीक्षा है, तो भला मैं इस परीक्षा से वंचित कैसे रह जाता? जो हर संघर्ष को पार करके, नियमों का पालन करते हुए निरन्तर आगे बढ़ता रहता है वही कुशल साधक होता है। देखा जाए तो सारी जिन्दगी ही एक कठिन परीक्षा है। जो खुद को साध लेता है वही जिन्दगी की परीक्षाओं को सहज रीति से पार कर लेता है क्योंकि उस साधक पर भगवान की बहुत बड़ी कृपा होती है। वह हज़ार भुजाओं से उसकी रक्षा करता रहता है। कहा गया है –

फानूस बनके हवा जिसकी
हिफाजत करे,
वह शमा क्या बुझे,
जिसे रोशन खुदा करे।

प्रश्न : आप लोग पवित्रता की बात करते हैं और इतनी ज़्यादा संख्या में भाई-बहनें साथ रहते हैं, यह कैसे सम्भव है?

यदि आप खुद साधक बन, मात्र एक साल ज्ञान मुरली सुनें और राजयोग का अभ्यास करें तो इस प्रश्न का संतोषप्रद उत्तर आपको खुद ही मिल जायेगा। जब सत्य का बोध हो जाता है कि मैं देह नहीं हूँ, तो देह का भान मिट जाता है। यहाँ के साधक एक-दूसरे को रूहानी नज़र से देखते हुए आपस में भाई-बहन बन जाते हैं। पवित्रता की डोर में बंधा हुआ यह भाई-बहन का रिश्ता, अथॉर्टी से बोलता है कि आग और कपास दोनों एक साथ रह सकते हैं। स्थापना के बहत्तर साल समाप्त होने को हैं, इतनी लम्बी अवधि में यदि कहीं

कुछ होता तो इस पवित्र संस्था पर सबकी उँगली उठ गयी होती। तब भूमण्डल के 133 देशों में इसका फैलाव नहीं हो पाता।

प्रश्न : आप लोग विश्व परिवर्तन की बात करते हैं, क्या आप समझते हैं कि इस राजयोग से सभी का जीवन दिव्यगुणों से सम्पन्न बन सकता है?

यहाँ विश्व के परिवर्तन की बात होती है। लक्ष्य भी यही है कि ''संस्कार परिवर्तन से संसार परिवर्तन''। शिक्षा तो दूसरे लोग भी देते हैं लेकिन शिक्षा तब तक अधूरी है जब तक उसमें चरित्र नहीं होता है। यहाँ की शिक्षा में चरित्र निर्माण ही मुख्य विषय है। हम बदलेंगे तो विश्व बदलेगा, हम सुधरेंगे तो विश्व सुधरेगा, यह स्लोगन यहाँ के राजयोगियों पर सत्य रूप में चरितार्थ होता है। कोई बदले या न बदले, हम बदल जायें तो हमें देख दूसरे भी बदलेंगे, यह मानकर यहाँ शिक्षा दी जाती है। जहाँ तक सर्वगुण सम्पन्न बनने की बात है, तो हर व्यक्ति अपने जीवन को सम्पूर्ण निर्विकारी, सर्वगुण सम्पन्न बना सकता है। आवश्यकता है इस राजयोग के नियमित अभ्यास की। यह साधना बिल्कुल आसान है। अपने जीवन की दिनचर्या में इस राजयोग को शामिल करना चाहिये। राजयोग एक ऐसी साधना है जिसमें परमात्मा अपनी लाइट-माइट को राजयोगी में ट्रांसफर कर देता है। जैसे आग की दहकती भट्ठी में जंग लगे लोहे के टुकड़े को डाल दिया जाय तो वह भी लाल हो जाता है। लोहा अपने आप लाल नहीं हुआ बल्कि अग्नि ने अपनी दहन शक्ति को लोहे में ट्राँसफर किया तब लोहा लाल हुआ। राजयोग में भी यही ईश्वरीय शक्ति काम करती है। आपने सुना है ना –

लाली मेरे लाल की,
जित देखूँ तित लाल,
लाली देखन मैं गई,
मैं भी हो गयी लाल।

प्रश्न : आप स्थानीय जेल में विगत पाँच वर्षों से नि:शुल्क सेवा दे रहे हैं, तो यह कैसे माना जाए कि कैदियों में परिवर्तन हो रहा है?

यह प्रश्न हमसे न पूछ कर, आप स्वयं जेल में जाकर कैदियों के अनुभव सुनकर और उनमें आए हुए परिवर्तन को मीडिया के माध्यम से यदि जन-जन तक पहुँचाएँ तो यह एक बहुत बड़ा सेवा का कार्य होगा। कैदियों की अपराधिक वृत्तियों में परिवर्तन का श्रेय ब्रह्माकुमार शिवेश्वर भाई को है क्योंकि जेल में राजयोग प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना शिवेश्वर भाई के अथक परिश्रम व प्रयास का ही परिणाम है। पूर्व वरिष्ठ जेल अधीक्षक भ्राता वी.के. जैन ने कारागार सचिव के साथ अपनी एक महत्त्वपूर्ण मीटिंग में स्वीकार किया था कि पहले बन्दी जहाँ छोटी-छोटी बातों को लेकर हुड़दंग मचाते थे अब वे नेक इंसान के रूप में नज़र आते हैं। बैरकों से जो शिकायतें आती रहती थीं, अब वो नहीं के बराबर हैं। उनका यह कथन 'दैनिक जागरण' में भी प्रकाशित हुआ था। जो कैदी आध्यात्मिक ज्ञान एवं राजयोग का प्रशिक्षण लेकर जेल से बाहर होते जा रहे हैं वे कहीं न कहीं ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर नियमित साधक के रूप में साधना में लगे हैं। यह उनकी आध्यात्मिक जागृति का ही परिणाम है। जो कैदी दूसरों का खून बहाकर जेल में आये थे वे ही अब दूसरों की जान बचाने के लिए अपना खून दे रहे हैं। परिवर्तन का इससे बड़ा प्रमाण और क्या चाहिये? कैदियों के खून देने का दृश्य स्थानीय चैनल वालों ने टी.वी. पर दर्शाया था। कैदियों के इस महान परिवर्तन के फलस्वरूप ही उत्तर प्रदेश की प्रमुख व संवेदनशील जेलों में ब्रह्माकुमारी राजयोग प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित होते जा रहे हैं और प्रशासन भी इस पर काफी ज़ोर दे रहा है। हमारी और शिवेश्वर भाई की जेल-सेवा से सन्तुष्ट जेल प्रशासन ने हम दोनों को प्रशस्ति-पत्र देकर ज़िलाधिकारी के समक्ष सम्मानित भी किया है।

❑❑